1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अग्ने रक्षाणो अंहसः।

– सामवेद 24

हे प्रकाश स्वरूप प्रमात्मन्! आप पाप से हमारी रक्षा करो।

O The luminous Lord ! protect us from sins and evil deeds, save us from distress.

वर्ष 41, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 जनवरी, 2018 से रविवार 21 जनवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार का यज्ञ सम्पन्न

कार्यकर्ताओं, युवा एवं बच्चों ने पहुंचाया हर हाथ "सत्यार्थ प्रकाश"

चौदह गोलियों वाली बन्दूक की गूंज से चर्चित रहा विश्व पुस्तक मेले का हर हॉल

जन सामान्य की शंकाओं का बखूबी शमन किया वैदिक विद्वानों ने

परमात्मा की वाणी – वेद एवं सत्यार्थ प्रकाश, उपनिषद्, मनुस्मृति रहे विशेष आकर्षण

दिल्ली के प्रगति मैदान में दिनांक 6 से 14 जनवरी 2018 तक चले 40वां विश्व पुस्तक बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। मेले में जहां एक ओर देश-विदेश के बुकस्टाल सजे हुए थे वहीं विभिन्न समुदायों के लोगों ने अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए भी पूरी जोर आजमाईश की हुई थी। एक विदेशी महिला ने अपनी टूटी-फूटी हिन्दी भाषा में बोलते हुए कहा, "जहां मुसलमान अपना कुरान फ्री में दे रहा है वहीं आर्य समाज 10 रुपये में सत्यार्थ प्रकाश बेचकर अच्छी टक्कर दे रहा है।" पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्टाल नं. 282 से 291 हॉल नं. 12-12ए पर महाशय धर्मपाल (चेरयमैन एम.डी.एच. ग्रुप व प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा) की पुत्रवधू व पौत्री ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर कार्यकत्ताओं का उत्साह वर्धन किया। वैदिक साहित्य के स्टालों पर जहां भारतीय जनमानस की भारी भीड़ देखने को मिली वहीं विदेशियों की रुचि भी इस बार आर्ष साहित्य के प्रति अधिक देखने को मिली विदेशियों द्वारा वेद सैट, सत्यार्थ प्रकाश व अन्य आर्ष साहित्य भारी मात्रा में खरीदते देखा गया। इस बार जहां लगभग 25000 सत्यार्थ प्रकाश, 500 वेद सैट और 100 मनुस्मृति की बिक्री हुई वहीं लाखों रुपये के आर्ष साहित्य की बिक्री पुस्तक मेले में दर्ज की गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अतिरिक्त परोपकारिणी सभा, अजमेर तथा गोविन्दराम हासानन्द का स्टाल भी आर्ष साहित्य के प्रचार-प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहा था। दिल्ली सभा के कार्यकर्त्ता श्रीमती वीणा आर्या व श्री

– शेष पृष्ठ 5 पर

विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर आर्यसमाज के वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल पर सेवाएं देते सभा के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री वेदव्रत जी एवं आर्य आर्यजन। इस अवसर पर वैदिक साहित्य मनु स्मृति, सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य साहित्य खरीदते मौलाना अंसार रजा, अब्दुल हामीद नुमानी एवं अन्य मतपंथी महिला एवं पुरुष।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में
महर्षि दयानन्द सरस्वती
194वाँ
जन्मोत्सव

फल्गुन कृष्ण 10 तद्नुसार शनिवार 10 फरवरी, 2018
भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन
यज्ञ : सायं 3 बजे भजन संध्या : सायं 4 बजे प्रीतिभोज : सायं 7 बजे

दक्षिण दिल्ली
आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी के सहयोग से
दशहरा ग्राउण्ड
श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-65

उत्तर पश्चिम दिल्ली
आर्यसमाज रोहिणी सै.-7 के सहयोग से
हनुमान पार्क, रोहिणी, सै.8
पैट्रोल पंप के सामने, दिल्ली-85

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनें।

निवेदक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल, पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल, उत्तरी प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं समस्त आर्य संस्थाएं

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित
विशाल ऋषि मेला
फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी सम्वत् 2074 तद्नुसार मंगलवार, 13 फरवरी, 2018
स्थान : रामलीला मैदान (अजमेरी गेट), नई दिल्ली-2
यज्ञ : दोपहर: 1.30 बजे ध्वजारोहण : दोपहर:2 .30 बजे
सार्वजनिक सभा : दोपहर 3.00 बजे से 6.00 बजे तक
इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।
इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक
महाशय धर्मपाल, प्रधान
सुरेन्द्र कुमार रैली, व. उप प्रधान
सतीश चड्डा, महामन्त्री
अरुण प्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष
आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

वेद-स्वाध्याय

विद्यादेवी की महिमा

यदाशसा वदतो मे विचुक्षुभे यद् याचमानस्य चरतो जनाँ अनु।
यदात्मनि तनवो मे विरिष्टं सरस्वती तदा पृणद् घृतेन।। - अथर्व. 7/57/1
ऋषिः **वामदेवः।।** देवता - **सरस्वती।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ- **जनान् अनुचरतः** = मनुष्यों की सेवा करते हुए **आशसा वदतः** = उनके साथ आशा से बोलते हुए, भाषण करते हुए, **मे** = मेरा **यत्** = जो मन कभी-कभी **विचुक्षुभे** = विक्षोभ को प्राप्त होता है और **याचमानस्य** = लोगों के हित के लिए उनसे प्रार्थना करते हुए या भिक्षा करते हुए **यत्** = जो मेरा मन विक्षोभ को प्राप्त होता है तथा **आत्मनि तन्वः** = अपने अन्दर अन्तःशरीर पर, अन्तःकरण पर **मे यत् विरिष्टम्** = मुझे जो चोट पहुंचती है, घाव होते हैं **तत्** = उस सबको **सरस्वती** = विद्यादेवी **घृतेन** = अपने ज्ञानपूर्ण और स्नेहमय मरहम से **आपृणात्** = भर दे, पर दे।

विनय- सार्वजनिक जीवन बिताना बड़ा कठिन है। बिल्कुल निःस्वार्थ भाव से लोक सेवा करते हुए भी बहुत बार जो कुछ सुनना पड़ता है और जो कुछ व्यवहार सहना पड़ता है उससे मन प्रायः विक्षुब्ध हो जाता है, हृदय को भारी चोट पहुंचती है। कई बार तो इनसे मन इतना खिन्न हो जाता है कि लोकसेवा छोड़ देना ही ठीक लगता है, परन्तु हृदयवासिनी सरस्वती देवी का ध्यान करके मैं रुक जाता हूं। मैं यह जानता हूं कि यदि मैं सचमुच सर्वथा निःस्वार्थ हूं, सच्चा सेवक हूं तो ऐसे भारी-से-भारी विक्षोभ और चोटें भी मेरे लिए क्षणिक हैं और ये मेरी आत्मविशुद्धि करने वाली और मुझे बलवान् बनाने वाली ही हैं। ऐसी चोटें लगने पर ज्यों ही मैं कछ देर के लिए अपने हृदयमन्दिर में बैठकर आत्मचिन्तन कर लूंगा तो अन्दर की ज्ञानमयी स्नेहस्वरूपिणी सरस्वती देवी की कृपा से मेरी ये चोटें क्षण में ठीक हो जाएंगी और मैं तब अपने को पहले से अधिक पवित्र तथा अधिक बलवाान् भी पाऊंगा। सरस्वती देवी केपास वह घृत है, ज्ञान और स्नेह का वह अद्‌भुत मरहम है, शान्ति और प्रफुल्लता देने वाला वह स्निग्ध ज्ञान है जिससे कि सच्चे पुरुष के सब घाव आत्मचिन्तन करने से जादू की भांति तनिक-सी देर में बिल्कुल ठीक हो जाते हैं। मनुष्य आत्मस्वरूप को सदा स्मरण न रख सकने के कारण ही विक्षुब्ध व व्याकुल हो जाता है। अतएव विचार व आत्मचिन्तन कर लेने से देखा जाता है कि मनन करने वाले के भारी-से-भारी मानसिक आघातों की पीड़ा भी बहुत-कुछ उसी समय चली जाती है। यद्यपि नाना प्रकार की सद्-आशाओं के भङ्ग हो जाने-से या भलाई के बदले घोर अपमान व आपत्ति मिलने से मेरा आन्तरिक, मानसिक शरीर चूर-चूर हो जाता है, क्षत-विक्षत हो जाता है, तथापि हे सरस्वती देवी! मेरी प्रार्थना है कि तुम सदा उन सब मेरे घावों को अपनी इस स्नेह-रसमयी चैतन्यकारिणी शान्तिदायिनी दिव्य मरहम से जादू की भांति भरकर ठीक करती रहो।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

केन्द्रीय विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना के विवाद के सम्बन्ध में

तो फिर इस देश में धर्म निरपेक्ष क्या है?

....देश की सबसे बड़ी न्यायिक संस्था द्वारा पूछा गया सवाल किस ओर इशारा कर रहा है। समझ जाईये सुप्रीम कोर्ट पूछ रही है कि क्या विद्यालयों में सुबह गाये जाने वाली प्रार्थना क्या किसी धर्म विशेष का प्रचार है? लगभग पचास सालों से गाई जा रही प्रार्थना सांप्रदायिक सद्‌भाव और सौहार्द का प्रतीक थी और अब अचानक धर्म विशेष का प्रचार करने वाली बन गई। इस याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने इसे गंभीर संवैधानिक मुद्दा मानते हुए कहा है कि इस पर विचार जरूरी है। कोर्ट ने इस सिलसिले में केंद्र सरकार और केंद्रीय विश्वविद्यालयों को नोटिस जारी करके 4 सप्ताह में जवाब मांगा है।...

विश्व की सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाले देश इंडोनेशिया की जलसेना का ध्येय वाक्य हैं ''जलेष्वेव जयामहे'' संस्कृत भाषा में हैं लेकिन ये वाक्य कभी वहां साम्प्रदायिक नहीं हुआ। पर विश्व में तीसरे नम्बर पर बोली जाने वाली भाषा हिंदी और संस्कृत में गाये जाने वाली स्कूल की प्रार्थना हिन्दुस्तान में साम्प्रदायिक हो गयी। जब 10 जनवरी को विश्वभर में विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनायें प्रेषित की जा रही थी तब माननीय उच्च न्यायालय केंद्र सरकार से सवाल पूछ रहा था कि केन्द्रीय विद्यालयों में हिंदी और संस्कृत भाषा में गाई जाने वाली प्रार्थना कहीं साम्प्रदायिक तो नहीं?

हालाँकि लोगों को उस समय ही समझ जाना चाहिए था जब बच्चों की किताब में ''ग'' से गणेश सांप्रदायिक हुआ और उसकी जगह ''ग'' से गधा धर्मनिरपेक्ष ने ले ली थी। लेकिन इसके बाद भारत माता की जय साम्प्रदायिक हुआ, फिर राष्ट्रगीत वंदेमातरम् और राष्ट्रगान भी साम्प्रदायिक हो गया था। अब देश के एक हजार से ज्यादा केंद्रीय विद्यालयों में बच्चों द्वारा सुबह की सभा में गाई जाने वाली प्रार्थना भी साम्प्रदायिक हो गयी? हो सकता है कुछ दिन बाद देश का नाम भी साम्प्रदायिक हो जाये और इसे भी बदलने के लिए नये नाम किसी विदेशी शब्दकोष से ढूंढ़कर सुझाये जाने लगे। इस हिसाब से अब तय हो जाना चाहिए कि आखिर इस देश में धर्मनिरपेक्ष क्या हैं?

देश की सबसे बड़ी न्यायिक संस्था द्वारा पूछा गया सवाल किस ओर इशारा कर रहा है। समझ जाईये सुप्रीम कोर्ट पूछ रही है कि क्या विद्यालयों में सुबह गाये जाने वाली प्रार्थना क्या किसी धर्म विशेष का प्रचार है? लगभग पचास सालों से गाई जा रही प्रार्थना सांप्रदायिक सद्‌भाव और सौहार्द का प्रतीक थी और अब अचानक धर्म विशेष का प्रचार करने वाली बन गई। इस याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने इसे गंभीर संवैधानिक मुद्दा मानते हुए कहा है कि इस पर विचार जरूरी है। कोर्ट ने इस सिलसिले में केंद्र सरकार और केंद्रीय विश्वविद्यालयों को नोटिस जारी करके 4 सप्ताह में जवाब मांगा है।

यदि केन्द्रीय विद्यालयों के मानव कल्याण के गीत साम्प्रदायिक हैं तो कश्मीर की मस्जिदों मदरसों में जब ये गीत गाए जाते हैं कि 'खुदा के दीन के लिए, ये सरफरोश चल पड़े, ये दुश्मनों की गर्दनें उड़ाने आज चल पड़े किसी में इतना दम कहां कि इनके आगे डट सकें' तो इन्हें क्या कहेंगे? कमाल हैं 'ना' पूरे देश में एक साथ ऊँचे स्वर में दिन में पांच बार गूंजने वाली अरबी भाषा में अजान धर्मनिरपेक्ष है और स्कूलों में सत्य और मानवता की राह सिखाने वाले हिंदी और संस्कृत के कुछ वाक्य साम्प्रदायिक? इन प्रार्थनाओं में कौन से धर्म का या किस धर्म के भगवान का नाम आ रहा है ? क्या सभी के कल्याण की प्रार्थना ऐसे शब्दों में जिसमें किसी धर्म या भगवान का नाम नहीं है, नहीं की जा सकती?

ऐसा क्यों है थानों में तहरीर से लेकर तहसील में बेनावे रजिस्ट्री के सारे काम उर्दू में होते हैं वे सब धर्मनिरपेक्ष हैं और भारतीय भाषा में बोले जाना वाला अभिवादन शब्द नमस्ते साम्प्रदायिक? माननीय उच्च न्यायालय में ही जिरह, बहस, वहां के अधिकांश कार्य उर्दू भाषा में होते आ रहे हैं क्या सर्वोच्च अदालत ने कभी इस पर सवाल क्यों नहीं पूछा? हो सकता है कल हिंदी सिनेमा से भी पूछ लिया जाये आप हिंदी में फिल्में बनाते हैं क्या यह किसी धर्म विशेष का प्रचार तो नहीं हैं? या फिर हिंदी सिनेमा के गानों पर भी सवाल खड़े होने लगें?

दूसरी बात यदि स्कूल में प्रार्थना में बोले जाने वाला संस्कृत का श्लोक साम्प्रदायिक हैं तो माननीय उच्च न्यायालय जी उच्चतम न्यायालय के चिह्न नीचे से 'यतो धर्मस्ततो जयः' का वाक्य हटाकर कलमा लिखवा दीजिये? भारत सरकार के राष्ट्रीय चिह्न से 'सत्यमेव जयते,' दूरदर्शन से 'सत्यं शिवम् सुन्दरम,' आल इंडिया रेडियो से 'सर्वजन हिताय सर्वजनसुखाय,' भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी से 'हव्याभिर्भगः सवितुर्वरेण्यं' और भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी से 'योगः कर्मसु कौशलं' शब्द भी इस हिसाब से साम्प्रदायिक हैं? दरअसल ये 21वीं सदी का भारत है जिसे यहाँ कुछ काम नहीं होता वह यहाँ की सांस्कृतिक विरासतों, धरोहरो से छेड़छाड़ करने लगता हैं, बाकी बचा काम मीडिया में बैठे कथित बुद्धिजीवी पूरा कर देते हैं।

दया कर दान विद्या का हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।
हमारे ध्यान में आओ प्रभु आंखों में बस जाओ,
अंधेरे दिल में आकर के प्रभु ज्योति जगा देना।

इसमें कौन सा ऐसा शब्द है जो किसी धर्म या पंथ की भावना पर हमला कर रहा हैं? क्या अब संस्कृत और हिंदी के श्लोकों और वैदिक प्रार्थना पर अदालत की कुंडिया खटका करेगी? किसी भी देश की संस्कृति उसका धर्म उसी की भाषा में ही समझा जा सकता है। हिंदी और संस्कृत तो हमारे देश के मूल स्वभाव में है क्या अब देश के मूल स्वभाव को बताने के लिए न्यायालय की जरूरत पड़ेगी। यदि प्रार्थना के यही शब्द उर्दू या अरबी में लिख दिए जाये तो क्या इसमें धर्मनिरपेक्षता आ जाएगी?

किसी ने इस याचिका पर सही लिखा कि इस प्रार्थना के एक-एक शब्द पर गौर करें तो भी कहीं यह संकेत नहीं मिलता कि यह किसी धर्म विशेष का प्रचार कर रही है। इस प्रार्थना में मेलजोल, सद्‌भाव, वतनपरस्ती, ईमान, प्रेम, आत्मिक शुद्धता की कामना की गई है। यदि हम अपने बच्चों को यह नहीं सिखाएंगे तो क्या आईएसआईएस और कश्मीरी पत्थरबाजों की भाषा सिखाएंगे या फिर हम जेएनयू की तरह पाकिस्तान के समर्थन में और भारत के विरुद्ध नारेबाजी केन्द्रीय विद्यालयों या अन्य विद्यालयों में भी सिखाना चाहेंगे। यदि हमारी सोच भारतीय प्रतीकों, चिह्नों आत्मबल पैदा करते गीतों का सिर्फ विरोध करने की है तो हमें डूब मरना चाहिए। - ***सम्पादकीय***

वेद और कुरान एक है?

....एक स्टाल पर लिखा नजर आया 'वेद और कुरान एक हैं, वेद और कुरान कितने दूर कितने पास' मैंने स्टाल के बाहर खड़े युवक से जिज्ञासावश पूछ लिया, श्रीमान् जी वेद और कुरान एक कैसे हैं? युवक ने कुरान हाथ में लेकर कहा ''कुरान सिर्फ दस रूपये में'' मैंने फिर उत्सुकतावश पूछ लिया ''आप ने लिखा है कि वेद और कुरान एक हैं, लेकिन वेद ग्रन्थ तो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर का दिया ज्ञान है, जो सिर्फ मनुष्य के कल्याण के बारे में बताता है जिसमें कोई इतिहास नहीं है,....

हर वर्ष की तरह इस बार भी विश्व पुस्तक मेले में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस बार मुझे खुशी इस बात की हुई कि बड़ी संख्या में युवा साहित्य में रुचि लेते दिखे जिनमें बड़ी संख्या में लड़कियां थीं जो हिंदी साहित्य और अपने वैदिक धर्म से जुड़ी पुस्तके खरीदती नजर आई। खैर मैं हॉल नम्बर 12ए में जब गया तो बाई और थोड़ा सा चलते ही सामने के एक स्टाल पर लिखा नजर आया 'वेद और कुरान एक हैं, वेद और कुरान कितने दूर कितने पास' मैंने स्टाल के बाहर खड़े युवक से जिज्ञासावश पूछ लिया, श्रीमान् जी वेद और कुरान एक कैसे हैं? युवक ने कुरान हाथ में लेकर कहा ''कुरान सिर्फ दस रूपये में'' मैंने फिर उत्सुकतावश पूछ लिया ''आप ने लिखा है कि वेद और कुरान एक हैं, लेकिन वेद ग्रन्थ तो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर का दिया ज्ञान है, जो सिर्फ मनुष्य के कल्याण के बारे में बताता है जिसमें कोई इतिहास नहीं है, भूगोल नहीं न कोई रूहानी कथा नहीं। वेद वही बात कहता जो विज्ञान अब कह रहा है, दूसरी बात वेद कहता है कि मनुष्य बनो, जबकि आपकी पुस्तक सिर्फ 1450 वर्ष पहली है, जो मनुष्य नहीं बल्कि मुसलमान बनने बनाने की प्रेरणा देती है तो दोनों एक कैसे?

युवक ने कहा आप इस्लाम और कुरान को जानना चाहते हैं, तो आप इसे पढ़िए। इस्लाम एक बेहद शांतिपूर्ण धर्म है, आप इसे पढ़ेंगे तो सब जान जाएँगे।

श्रीमान् जी, वैसे तो आईएसआईएस, तालिबान, बोको-हरम, लश्कर जैसे संगठन के कारनामे, बाजारों में बिकती यजीदी समुदाय की मासूम बच्चियों और अफगानिस्तान, सीरिया यमन के हाल देखकर काफी समझ चुका हूँ। आप कहते हैं तो कुरान ले लेता हूँ।

युवक बोला, आप उन सबको छोड़िए, वे लोग इस्लाम और कुरान को नहीं समझते!

मैंने पूछा, ओह! इसका मतलब यानी उन्होंने ये कुरान नहीं पढ़ी? या कोई गलती से कोई दूसरी कुरान पढ़ ली है?

नहीं जनाब, उन लोगों ने कुरान तो यही पढ़ी है। पर उन्होंने इसका गलत तर्जुमा (अर्थ) निकाल लिया है। भाईजान जो कम पढ़े लिखे लोग होते हैं वे इस्लाम की राह से भटक जाते हैं वरना इस्लाम तो अमन सिखाता है।

जी, हो सकता है। पर मैंने तो सुना है कि वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर का मुख्य हमलावर मोहम्मद अत्ता एयरोनाटिक्स इंजीनियर था, ओसामा बिन लादेन ने भी सिविल इंजीनियर की डिग्री हासिल की थी, अबू बक्र अल बगदादी पीएचडी है, पाकिस्तान के हाफिज सईद के पास दो-दो मास्टर्स डिग्रियां हैं और भी कई आतंकी समूह के मुखिया बेहद पढ़े लिखे और बड़े डिग्रीधारी है?

अरे जनाब वे पागल हैं भारत में तो ऐसा नहीं है? युवक ने पूछा!

मैंने कहा, मैं आपसे थोड़ा सा सहमत हूँ पर पूरी तरह नहीं! क्योंकि अपने ही देश में मुम्बई हमलों का आरोपी याकूब मेमन पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेट था, संसद हमले का आरोपी अफजल गुरु वारदात के समय एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा था, आतंकी संगठन आईएसआइएस का झंडा और लोगो बनाने वाला अपने ही देश का मोहम्मद नासिर भी शायद कम पढ़ा लिखा नहीं होगा? इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन, में मार्केटिंग मैनेजर मोहम्मद सिराजुद्दीन इस्लामिक स्टेट के लिए सदस्य बनाने का काम करता था। इसके बाद पिछले वर्ष ही लखनऊ मुठभेड़ में मारा गया आतंकी सेफुल्लाह भी कोई कम पढ़ा लिखा नहीं था?

आपसे वही तो कह रहा हूँ कि इन लोगों ने इस्लाम को ठीक से समझा नहीं है। आप कुरान सही ढंग से पढ़िए, हदीसों को समझिए। आप समय दें तो मौलाना जी से आपकी मुलाकात करवा दूँ?

बात ठीक है श्रीमान् जी पर मेरे जैसे नए लोगों को इस्लाम को समझाने के बजाय आप कुरान का सही तर्जुमा करने के लिए अपने मौलाना जी को सीरिया, यमन, लीबिया, अफगानिस्तान भेज दीजिये। जो कुरान का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं, आप जाकर असली कुरान और सही इस्लाम का प्रचार करके, उन भटके हुए लोगों को क्यों नहीं सुधारते ताकि आपके शांतिपूर्ण धर्म की बदनामी न हो? श्रीमान जी यमन और सीरिया भी दूर है क्यों न उन लोगों को सही तर्जुमा समझाया जाये जो पैगम्बर पर एक फेसबुक पोस्ट को लेकर बंगाल में बसीरहाट को जला डालते हैं, कमलेश तिवारी के एक बयान के बाद मालदा की सड़कों पर हिंसा करने करीब 2 लाख उतर आते हैं। रोहिंग्या मुद्दे पर बंगाल में खड़े होकर कहते है कि उनकी हमारी कुरान एक है, या फिर उन्हें ही समझा दीजिये जो तीन तलाक और हलाला पर सरकार को घेरकर बैठे है?

अच्छा चलो वह भी दूर है कश्मीर में आईएस के झंडे लहराते युवाओं को ही समझा दीजिये, शांति का ये पाठ दक्षिण कश्मीर की मस्जिद में मुफ्ती शब्बीर अहमद कासमी को भी समझा दीजिये जो अपनी तकरीरों से पिछले दिनों आतंकी संगठन से जुड़ने की अपील कर रहे थे, यही नहीं खुद को सूफी विचारधारा का कहने वाले मौलवी सरजन बरकती ने भी हिज्बुल कमांडर बुरहान वानी का गुणगान किया था और लोगों को समर्थन के लिए उकसाया भी था। चलो वह भी दूर है उमर खालिद जैसे युवाओं को ही समझा दीजिये जो खुलेआम कह रहे होते हैं भारत की बर्बादी तक जंग चलेगी? भारत तेरे टुकड़ें होंगे इन्शाल्लाह-इन्शाल्लाह।

युवक ने कहा जनाब इन सब बातों के लिए मेरे पास टाइम नहीं है। आप फिर किसी दिन आना अभी कुरान लेनी हो लीजिये वरना रहने दीजिये अब मैं क्या कहता! बस यही कहा आपके अनुसार कुरान और वेद ही हैं तो मेरे पास वेद है वही मुझे मनुष्यता के श्रेष्ठ मार्ग का रास्ता दिखाते रहते हैं, नमस्ते जी।

- राजीव चौधरी

बोध कथा

शरीर एक अनमोल रत्न

लाहौर में लाहौरी और शहआलमी दरवाज़े के बाहर एक उद्यान (बाग) था किसी समय। इस उद्यान में एक फ़क़ीर रहता था जिसके दोनों बाजू नहीं थे। उद्यान में मच्छर बहुत होते थे। मैंने कई बार इस फ़क़ीर को देख। हाथ थे नहीं। आवाज़ देकर, माथा झुकाकर वह पैसा मांगता था। एक दिन मैं उसके पास खड़ा हो गया; पूछा-''भाई, पैसे तो मांग लेते हो। लोग तुम्हारे इस प्याले में फेंक देते हैं। परन्तु रोटी कैसे खाते हो?''

वह बोला-''जब पैसे इकट्ठे हो जाते हैं, शाम हो जाती है तो वह जो परे नानबाई की दुकान है न, उसको आवाज़ देता हूं-'ओ जुम्मा। आ जा, पैसे जमा हो गये हैं। इन्हें ले जाओ, मुझे रोटियां दे जाओ।' तब वह आता है, पैसे उठाकर ले जाता है, रोटियां दे जाता है।''

मैंने कहा-''रोटी तो आ गई, परन्तु आप खाते कैसे हो?''

वह बोला-''स्वयं तो मैं खा नहीं सकता। रोटी सामने पड़ी रहती है। तब मैं सड़क पर जाने वालों को आवाज़ देता हूं-''सामने जानेवालो! प्रभुकरे तुम्हारे हाथ सदा स्थिर रहें! मुझपर दया करो, तरस खाओ मुझ पर! मुझे रोटी खिला दो! मेरे हाथ नहीं हैं।' प्रत्येक व्यक्ति तो सुनता नहीं, परन्तु किसी-किसी को दया आ जाती है। वह प्रभुका प्यारा मेरे पास आ बैठता है। अपने हाथ से ग्रास तोड़कर मेरे मुंह में डालता है और मैं खाता हूं।''

उसकी आंखों में आंसू थे। मेरा दिल भर आया। फिर भी पूछा-''रोटी तो इस प्रकार खा लेते हो भाई! परन्तु पानी कैसे पीते हो?''

वह बोला-''सामने घड़ा रखा है न? उसके पास जाता हूं। बैठकर एक टांग से इसको सहारा देता हूं। दूसरी से इसके मुंह के नीचे प्याला करता हूं और प्याले में पानी आ जाता है।''

मैंने पूछा-''पीते कैसे हो?''

वह बोला-''पशुओं की भांति प्याले पर झुककर पीता हूं।'' मैंने कहा-''परन्तु यहां मच्छर भी तो बहुत हैं। यदि माथे पर या शरीर पर मच्छर लड़ जाए तो फिर क्या करते हो?''

वह बोला-''मच्छर तो सचमुच बहुत हैं। मेरा यह शरीर देखो, माथा देखो, सबको मच्छरों ने लहूलुहान कर रखा है। माथे पर कोई मच्छर लड़ जाय तो माथे को ज़मीन पर रगड़ता हूं और शरीर के दूसरे भाग पर पड़ जाय तो पानी से निकली हुई मछली की भांति भूमि पर लोटता हूं, तड़पता हूं।''

हाय-हाय! केवल दो हाथ नहीं ओर कितनी दुर्गति बन रही है!

इस शरीर की निन्दा मत करो! वस्तुतः यह अनमोल रत्न है। इसका प्रत्येक अंग इतना मूल्यवान् है कि संसार का कोई भी कोष इसका मूल्य नहीं दे सकता। परन्तु इसके साथ यह भी देखो कि यह शरीर मिला किसलिए है? इसका प्रत्येक अंग किस उद्देश्य के लिए है? इससे लाभ उठाओ! इसे प्रयोग करो, परन्तु जीवन के वास्तविक आदर्श को न भूल जाओ। यह यौवन बर्बाद करने के लिए नहीं मिला। ये आंखें पापों को ढूंढने के लिए नहीं मिलीं। ये कान निन्दा सुनने के लिए नहीं मिले। ये हाथ दूसरो का गला घोंटने के लिए नहीं मिले। यह मन अहंकार और मोह के जाल में फंसने के लिए नहीं मिला। यह वाणी कड़वा बोलने और आग लगाने के लिए नहीं मिली; प्रभु का स्मरण करने और मीठा सत्य बोलने के लिए मिली है।

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

बलिदान दिवस
बसन्त पंचमी पर विशेष

धर्म वीर शहीद बालक हकीकत राय

...नवाब ने जब हकीकत राय की यह सिंह-गर्जना सुनी, वह क्रोध के मारे लाल-पीला हो गया। उसने उसी क्षण जल्लाद को बुलावाया और हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दिया। यह देखकर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। किसी में कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी।.....

आर्यावर्त्त (भारतवर्ष) वीर शहीदों, धर्मात्माओं, ऋषियों, मुनियों की पुण्य-भूमि है। समय-समय पर भारत के वीर शहीदों ने देश, धर्म, जाति की रक्षा में हंसते हुए अपना जीवन भेंट चढ़ाया है। उन्हीं वीर शहीदों की प्रथम पंक्ति में धर्म शहीद बाल हकीकत राय का नाम आता है। जिसने पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में धर्म रक्षा में अपने प्राण न्योछावर कर संसार को चकित कर दिया था। आइए, उसी वीर बालक के महान त्याग एवं बलिदान की गाथा पढ़ें।

पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) के स्याल कोट नामक नगर में महाजन भागमल एवं उसकी पत्नी कौरा देवी रहते थे। सन् 1719 ईस्वी में उनके घर एक पुत्र रत्न जन्मा। उसका नाम हकीकत राय रखा गया। परिवार धन-धान्य से भरपूर था, फलतः हकीकत राय का पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ। वह कुशाग्र बुद्धि था, सब उसे घर में प्यार करते थे। महाजन भागमल तथा श्रीमती कौरा देवी उसे रामायण, महाभारत की कथाएं सुनाया करते थे। उनकी धर्म परायणता का बालक हकीकत राय पर भारी प्रभाव पड़ा।

आठ वर्ष की आयु में बालक हकीकत राय ने पढ़ाई शुरू की। मेधा बुद्धि होने से वह एक बार में समझाने से ही पाठ याद कर लेता था। मौलवी (अध्यापक) उस पर बेहद प्यार करता था, इसलिए मुसलमान बालक उससे ईष्या-द्वेष करते थे।

एक दिन मौलवी साहब किसी कार्यवश पाठशाला से कुछ समय के लिए बाहर चले गए तथा जाते समय हकीकत राय को उन्होंने कक्षा सम्भालने का आदेश दिया। उनके चले जाने पर मुसलमान बच्चों को उसने शोर-शराबा करने से रोका तो उन्होंने उसकी भारी पिटाई की। मौलवी साहब के आने पर हकीकत राय ने सारी बात उन्हें बता दी। मौलवी साहब ने मुसलमान बच्चों की अच्छी तरह धुनाई की तथा हकीकत राय को पुचकारकर छाती से लगाया। इससे मुसलमान बालकों ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातमा को गाली देने का आरोप लगाकर मौलवी की शिकायत अपने माता-पिता और नगर के काजी से कर दी। उन दिनों काजियों का बोल-बाला था। उन्होंने फतवा जारी कर दिया कि या तो हकीकत राय मुसलमान बने या उसका सिर काट लिया जाए। महाजन भागमल, कौरा देवी अन्य गणमान्य हिन्दुओं ने काजी से प्रार्थना की कि छोटे से बालक को क्षमा कर दिया जाए लेकिन उनकी प्रार्थना किसी ने भी नहीं सुनी तथा मुख्य काजी ने भागमल, कौरा देवी को लात मार-मारकर भगा दिया।

कुछ हिन्दुओं ने नगर के हाकिम अमीर बेग के पास जाकर सारी घटना सुनाई। नगर हाकिम एक शरीफ आदमी था। उसने काजियों को बुलाकर समझाया कि यह छोटे-छोटे बच्चों का झगड़ा है, उसे खत्म करने में ही सबकी भलाई है। उसके समझाने पर भी वे न माने और अमीर बेग पर भी रिश्वत लेने का आरोप लगा दिया। उसने भी विवश होकर मामला नवाब लाहौर को भेज दिया।

लाहौर के नवाब का कोई पुत्र नहीं था, केवल उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम नूरा था। उसने बालक हकीकत राय की सुन्दर भोली सूरत तथा छोटी उम्र देखी और सारे मामले को सुना तो दंग रह गया कि अब क्या किया जाए। अचानक उसने हकीकत राय से कहा- बेटा, हकीकत राय, मैं तेरी सुन्दर भोली सूरत पर पूरी तरह कुर्बान हूं। तू मेरी एक बात मान ले तू मुसलमान बन जा, तेरी जान बच जाएगी। मैं अपनी सूबसूरत बेटी नूरां का तेरे साथ निकाह कर दूंगा। मेरी सारी जायदाद (सम्पत्ति) का तू मालिक बन जाएगा। हकीकत राय ने नवाब का यह फैसला सुनकर उत्तर दिया-

'नवाब साहब, बात आपकी,
मुझे न तनिक सुहाती है।
सच कहता हूं, अक्ल आपकी,
मुझको यह दर्शाती है।।
जो जग को रचने वाला है,
जो सर्व विश्व का है स्वामी।
तुम जगदीश्वर को भूल गए,
जो सच्चा न्यायकारी नामी।।
यदि मुसलमान बन जाऊं मैं,
क्या मौत मुझे 'ना' आएगी?
वह शक्ति कौन सी है जग में,
जो तुमको सदा बचाएगी?

बालक हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब दंग रह गया और सिर नीचा करके बोला-''बेटा, संसार में प्रत्येक व्यक्ति की मौत आती है। मौत के पंजे से कोई भी नहीं बचा है और न बचेगा।'' नवाब की यह बातें सुनकर वीर हकीकत राय ने गर्जते हुए कहा-

मरना है सबको एक रोज,
तो फिर क्यों धर्म डुबाऊं मैं?
गौ रक्षक से गौ भक्षक बन,
फिर पापी, क्यों कहलाऊं मैं?
मैं राम कृष्ण का वंशज हूं,
मैं वैदिक धर्म निभाऊंगा।
मेरी तो मौत सहेली है,
मैं उसको गले लगाऊंगा।।
है अमर आत्मा, याद रखो,
न मारे से मर सकती है।
ईश्वर कर्मों का फल देता,
न पेश किसी की चलती है।।
मैं जन्म दूसरा धारूंगा,
दोबारा जग में आऊंगा।
फिर तुम जैसे हत्यारों से,
निर्भय होकर टकराऊंगा।।

नवाब ने जब हकीकत राय की यह सिंह-गर्जना सुनी, वह क्रोध के मारे लाल-पीला हो गया। उसने उसी क्षण जल्लाद को बुलावाया और हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दिया। यह देखकर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। किसी में कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी। भागमल, कौरा देवी और रिश्तेदार रो रहे थे। हकीकत राय की चौदह वर्ष की आयु में बटाला की लक्ष्मी देवी से शादी हो गई थी। वह बेचारी बटाला में बिलख रही थी। हिन्दू जनता भयभीत थी, यह था आपसी फूट का भयंकर परिणाम।

यह सन् 1734 ईस्वी की घटना है। सारे देश में बसन्त पंचमी का महापर्व मनाया जा रहा था और लाहौर में घोर अत्याचार हो रहा था। बालक हकीकत राय को वघ स्थल पर ले जाया गया। जल्लाद ने जब हकीकत राय को देखा तो उसका पत्थर दिल भी पिघल गया और तलवार हाथ से नीचे गिर गई। यह देखकर हकीकत राय बोला-

जल्लाद दया करके भाई,
अब बात मानले तू मेरी।
तू तो अब अपना फर्ज निभा,
क्यों करता है वृथा देरी।।
यदि मुझसे मोह करेगा अब,
तू नाहक मारा जाएगा।
तेरे भी बालक रोएंगे,
सारा कुनबा दुःख पाएगा।।
मत बाधा बन तेरे पथ में,

- शेष पृष्ठ 8 पर

पुस्तक परिचय

कल्याण मार्ग का पथिक

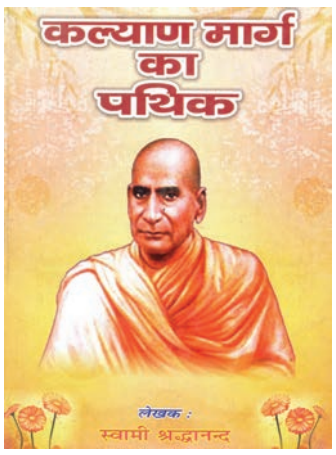

युगपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द का भी उल्लेख महर्षि वाल्मीकि की परम्परा में किया जा सकता है। उन्होंने अपनी साधना के बल पर वकील मुंशीराम से चलकर महात्मा मुंशीराम का स्थान ग्रहण किया। बाद में वे इससे भी ऊंचे चढ़कर स्वामी श्रद्धानन्द बने। आध्यात्मिक दृष्टि से एक संत, शिक्षा की दृष्टि से प्रथम श्रेणी में विराजमान स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का जीवन एक खुली पुस्तक है। उनकी आध्यात्मिकता ऐसा ज्योतिस्तम्भ है जिससे प्रकाश पाकर हर आदमी अपनी जीवन-यात्रा में सफलता पा सकता है। गहन अंधकार में भटकने के बाद देव दयानन्द के सत्संग ने लाला मुंशीराम को उसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द बनाया जिस प्रकार पारसमणि के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है।

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा रचित एवं आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक द्वारा सम्पादित यह पुस्तक स्वाध्याय के लिए व ईष्ट मित्रों व रिश्तेदारों को भेंट करने हेतु आप भी प्राप्त कर सकते हैं-

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

समस्त आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थान उत्साह के साथ आयोजित करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) - 10 फरवरी, 2018 (शनिवार)

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणास्रोत आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस** इस वर्ष **10 फरवरी** को है। भारत सरकार की ओर इस दिन एच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी है। अतः आप सबसे प्रार्थना है कि आप इसके आयोजन की तैयारियां अभी से आरम्भ कर दें। इस दिन **सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या** आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द जीवनी आदि सभा कार्यालय में उपलब्ध है, प्राप्त करने के लिए मो. 9540040339 पर सम्पर्क करें। - **महामन्त्री**

हर हाथ "सत्यार्थ प्रकाश" पहुंचाते आर्य कार्यकर्ता, युवा एवं बच्चे

मातृशक्ति

आदर्श दिनचर्या

ब्राह्ममुहूर्त में उठने के बाद सबसे पहले हमें क्या करना चाहिए आइए इस विषय में चर्चा करते हैं-

उष:पान - प्रात:काल उठकर पाव या आधापाव के लगभग जल का पान करना, स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त लाभकारी है। इसे 'उष:पान' कहते है। उष:पान की महिमा योग और आयुर्वेद दोनों में मुक्तकण्ड से गायी गई है।

प्रात: उष:पान करने से मल विसर्जन भी खुलकर होता है। कब्ज दूर होती है। यदि उष:पान से पूर्व योग की जलनेति क्रिया कर ली जाये तो और भी अधिक लाभ होता है।

मल विसर्जन : मल विसर्जनार्थ सदा सूर्योदय से पहले करना चाहिए। प्रात: सूर्योदय से पूर्व शौच से निवृत्त होने से शरीर निरोगी तथा आयु की वृद्धि होती है। सुश्रुत में लिखा है-

आयुष्यमुषसि प्रोक्तं मलादीनां विसर्जनम्

अर्थात् ''प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व मलादिकों का त्याग करना दीर्घ-आयु प्रदान करने वाला है।'' दाहिने पैर पर जोर देकर बैठने से शौच खुलकर आता है। यदि मल विसर्जन करते समय दांतों को भींचकर बैठा जाये तो दांतों के रोग नहीं होते। कई लोग किसी अन्य आवश्यक कार्य के आ जाने पर मलमूत्र के वेग को रोक लेते हैं। ऐसा करना शरीर के लिये महान् हानिकारक है। मलमूत्र के वेग को कभी भी नहीं रोकना चाहिए। क्योंकि इन वेगों के रोकने से कई प्रकार के भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसीलिए शरीर शास्त्रियों ने लिखा है-

रोगा: सर्वेऽपि जायन्ते वेगोद्दीरण-धारणै:।

अर्थात् ''वेगों की गति को धारण करने से शरीर में सब प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं।''

प्रात: भ्रमण : जैसाकि पहले बतला चुके हैं, प्रात:काल का समय शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियों के विकास के लिये अत्यन्त गुणकारी है और आत्मा के लिये शान्ति तथा आनन्द प्रदान करने वाला है। इस समय की मन्द-मन्द चलती हुई अत्यन्त शुद्ध, सुगन्धित तथा लाभप्रद पवन में प्राणदायिनी जीवनी शक्ति का बहुत अधिक भाग रहता है। अत: वह मनुष्य में विशेषकर नव जीवन का संचार करने वाली बड़ी ही सुहावनी और शारीरिक शक्ति का बहुत अधिक भाग रहता है। अत: वह मनुष्य में विशेषकर नव जीवन का संचार करने वाली बड़ी ही सुहावनी और शारीरिक शक्ति तथा आरोग्यता के लिये अमृत के समान है।

- शेष अगले अंक में

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उपस्थित गणमान्य व आर्यजन सर्वश्री प्रेम अरोड़ा, विनय आर्य, ईश नारंग, ओम प्रकाश आर्य, शिव कुमार मदान, बलदेव राज, अजय सहगल, राजेन्द्र दुर्गा, ऋषि राज, सुखबीर सिंह आर्य, अजय तनेजा, श्रीमती विद्यावती आर्य, श्रीमती सुषमा, श्रीमती उषा किरण, श्रीमती तृप्ता, दयाप्रसाद वैद्य, चतर सिंह नागर, जगदीश लाल भाटिया, वेद व्रत आर्य, किशन कुमार, देवेन्द्र सचदेवा, शीश पाल आर्य, सुभाष कोहली, प्रेम शंकर मौर्य, क्षेत्र पाल आर्य, धर्मेन्द्र आर्य, एस.पी. सिंह, प्रद्युम्न आर्य, जवाहर भाटिया, अशोक गुप्ता, सुरिन्द्र चौधरी, योगेश आर्य, मानधाता सिंह आर्य, आचार्य दिनेश, आचार्य नवीन, रवि प्रकाश, संदीप आर्य ने रात-दिन एक करके महर्षि के सपनों को साकार करने के लिए पुस्तक मेले में अपनी-अपनी पूर्ण आहुतियां डालीं। मेले में जन सामानय की शंकाओं के समाधान के लिए केन्द्र स्थापित किया गया था जिसमें आर्य विद्वानों के अनेक गैर आर्य समाजी युवाओं, महिलाओं बुजुर्गों की शंकाओं का समाधान किया गया। काग्रकत्ताओं के परिवारीजनों बच्चें एवं माताओं ने भी '14 गोलियों वाली बंदूक यानी सत्यार्थ प्रकाश' को मेला दर्शकों तक पहुंचाने में विनी विशेश भूमिका निभाई।

हॉल नं. 8 साहित्य मंच से ''यज्ञ और पर्यावरण'' विषय पर श्री ईश नारंग व श्री विनय आर्य ने यज्ञ पर वैज्ञानिक शोधों और पर्यावरण संतुलन पर इसका प्रभाव दर्शाते हुए अपने-अपने उद्बोधन में उपस्थित जनसमुदाय के समक्ष अपने तर्क संगत विचार प्रकट किये कि 'आज के समय में पर्यावरण शुद्धि के लिए एक मात्र विकल्प हमारे ऋषियों द्वारा आदिकाल से यज्ञ की परम्परा कायम है जो आज भी उतना ही तर्क संगत व आवश्यक है जितना आदि काल में था।' डॉ. विवेक आर्य ने अपने उद्बोधन में 'मनुस्मृति' पर बोलते हुए 'प्राचीन वर्णव्यवस्था को आज भी उतना ही तर्क संगत बताया जितनी प्राचीन समय में थी क्योंकि यह व्यवस्था कर्म व्यवस्था पर आधारित है न कि जन्म व्यवस्था से निर्धारित होती है।' स्टालों की सजावट, पुस्तकों के क्रम व सुन्दर व्यवस्था हेतु सभी कार्यकर्त्ताओं को महाशय धर्मपाल जी ने अपना आशीर्वाद दिया जिन्होंने निरंतर परिश्रम कर इन्हें आकर्षक बनाया और निरंतर पूरे नौ दिन अपनी सेवाएं प्रदान कीं। - *सतीश चड्डा*

वैदिक विदुषी की आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किए जाने वाले माता अमृतबाई कन्या संस्कृतकुलम् के संचालन एवं व्यवस्था के लिए आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त विदुषी महिला की आवश्यकता है। संस्कृतकुलम में समस्त व्यवहार संस्कृत भाषा में ही किए जाते हैं। अत: संस्कृत भाषा/व्याकरण का पूर्ण पारंगत अभ्यर्थी जो दिल्ली में रहकर निरन्तर अपनी सेवाएं प्रदान कर सके, अपना आवेदन पत्र सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेज देवें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। - *महामन्त्री*

Veda Prarthana - 28

God the Overwhelming and Unfathomable Power

- Acharya Gyaneshwarya

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति
घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति
श्रद्धस्मै धत्त स जनास इन्द्रः।।

Yam sma prachhanti kuh seti ghoram, utemahurnaisho astityenam, So aryah pushtih vij eva aminati, shradsmai dhat sa janasa indrah.

(Rig Veda 2:12:5)

Yam sma prachhanti about whom people ask, kuh seti ghoram where is that Overwhelming, Unfathomable Power, God? utemahurnaisho astitye nam about whom some say that He does not exist. So God, vij eva aminati like an earthquake shakes up or destroys, aryah pushtih the wealth and vanity of wealthy or vain persons, janasa human beings, shradsmai dhat have faith in and devotion to God, sa indrah He is Master of all spiritual and material wealth, the Most Powerful One and Universal Benefactor.

God is the master of the Universe as well as the Universal Protector and Benefactor. God has given us birth on this earth and in His kindness evey moment everyday protects and guides us in life by giving us wisdom and inspiring us to follow truth and do virtuous things in life. He has created all of the wonderful natural things on earth which we may use wisely to make our life happier and more enjoyable. Even though God is the Source of all true knowledge and is our Supreme Well-wisher, yet many human beings have strong doubts about the existence of God because God cannot be seen by our eyes or proven by experiments of modern science. Other persons in fact vehemently believe and/or proclaim that there is no real entity such as God and God is a figment of our imagination. Still others claim even if there was an entity such as God, we should be self reliant and have no need for God in our lives.

Some atheists are so misguided and audacious that they have made public announcements of large monetary awards if one could successfully proe God to them. Such atheists have the convicition that in this 21st century, an era of knowledge, we can fulfill all human needs with new inventions of science. In the present civilized and enlightened world we should get rid of this false faith in God and finally uproot the lingering misguided beliefs in God that have existed for the past sevral thousand years. Moreover, these atheists state because life is short and our only chance on the earth to be alive, we should stop wasting our time over this imaginary entity called God. Instead, we should spend all our time and energy in earning wealth and prosperity as well as enjoying creature comforts and sensual pleasures.

Many so called 'believers' while they pay lip service to a belief in God also have doubts about God's existence because God does not grant them the things which they pray for. Their sufferings do not go away; their needs and/or desires do not get fulfilled. They find that their bargaining with God as a result of prayer does not succeed the way they would like. This shakes their faith in God and despite some inner fear if they were to overtly deny God, they are overall attractd to atheist ideals. The goals of many such "believers," like the atheists, is also to work hard day and night to acquire more and more wealth and with it buy physical objects that give pleasure to seses and enjoyment in life. Many other similar persons decide not even to work hard, but both wish for and start making effort to acquire wealth by any means possible including use of lies, cheating, deception, unjust means and even violence to snatch money from others.

There are large number of persons on the earth whose sole or main goal in life is to quickly acquire as much money as possible by any means even if they are wrong and with that wealth buy expensive foods, fine clothes, a big house (or houses), fancy cars and other creature comforts. Such persons, however do not know or recognize that their wealth, prosperity, fame or pseudo honor gained by ill means will one day come crashing down as happens in a destructive earthquake. They will get such a Jolt in their life that in a few moments all they have struggled to gather over many years will be crushed to dust. Such persons are often struck by calamities such as an incurable illness, loss of a loved close family member, major loss in business, A prolonged expensive and draining court case etc. so that from then on the person is incapacitated physically and/or mentally and not fully functional. Their false pride, pseudo-strength and will power are permanently vanquished. The person from then on loses his wisdom, courage, strcngth, initiative etc. and behaves as if he/she is half-alive and half-dead.

Thankful are the people who recognize God's jolt in their life and instead of lamenting recognize God's immense power. They finally learn that their abilities and power are limited, find humility, and straighten out their lives. Such jolts bring them closer to God.

The message of this Veda mantra is that O human beings! Always remember God who is called Indra in this mantra because He is the Master of the universe, the Most Powerful One and Giver of physical and spiritual treasures of life. He is the Creator, maintainer and Sustainer of the universe. Always have faith in God and His judgement without any doubts. If you carefully look and ponder over the orderly universe, innumerable galaxies, stars and planets you will realize that only Omniscient, omnipotent and Omnipresent God could have accomplished this. Only a person who realizes God as God truly is and does not have false misconceptions about God and His attributes, as well as follows God's commands and no one else's will find true inner peace, happiness, prosperity and fulfillment in life. God is the Giver to all the givers and King of all kings on the earth, therefore, in personal life follow a virtuous path and ask God to fulfill your needs, not others. On the other hand, a person who follows evil methods and makes his/her own deceitful rules to acquire prosperity by any means possible, he/she will inevitably fail in life even if there is an apparent delay. therefore, even though God is invisible to us through our eyes, God the Ultimate Seer sees everything we do and based on His just judgement we will someday receive appropriate rewards or punishment for our deeds.

(For God's attributes, also see mantras # 1, 2, 5, 8, 10, 20, 30, 31)

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

अन्तरतालं सम्बन्धितशब्दानि - 38

गतांक से आगे....

(1)	ID	परिचयपत्रम्	
(2)	Data	टंकितांशः	
(3)	Edit	सम्पादनम	
(4)	Keyboard	कुंचिपटलम्	
(5)	Timeline	समयरेखा	
(6)	Login	प्रवेशः	
(7)	Share	वितरणम्, प्रसारणम्	
(8)	Laptop	अंकसंगणकम्	
(9)	Search	अन्वेषणम्	
(10)	Default	पूर्वनिविष्टम्	
(11)	Input	निवेशः	
(12)	Output	फलितम्	
(13)	Block	अवरोधः	
(14)	Display	प्रदर्शनम्/विन्यासः	
(15)	Wallpaper	भीत्तिचित्रम्	
(16)	Theme	विषयवस्तुः	
(17)	User	उपभोक्ता	
(18)	Smart phone	कुशलदूरवाणी	
(19)	Tag	चिह्नम्	
(20)	Setup	प्रतिष्ठितम्	
(21)	Install	प्रस्थापना/प्रतिस्थापनम्	
(22)	Privacy	गोपनीयता	
(23)	Manual	हस्तक्रिया	
(24)	Accessibility	अभिगम्यता	
(25)	Error	त्रुटिः	
(26)	Pass word	गूढ़शब्दः	
(27)	Code no	कूटसंख्या	
(28)	Pen drive	स्मृतिशलाका।	

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

गंगोह के आर्यों को जातिरक्षा के लिए यातनाएं

सन् 1885 ई. में धर्मवीर पण्डित लेखरामजी ने गंगोह जिला सहारनपुर में आर्यसमाज की स्थापना की। 1895 ई. में जो आर्यसमाज शिथिल हो चुका था वह फिर से सक्रिय हो गया। एक सम्पन्न घराने का श्री रहतुलाल नामक युवक इसका सदस्य बना। तभी सात वर्ष से पतित घोषित करके बहिष्कृत किये गये तीन वैश्य युवकों की प्रार्थना पर उन्हें शुद्ध करने का निश्चय किया गया।

इस पर गंगोह के पौराणिकों में खलबली मच गई। बिरादरीवाले पंचायतें करने लगे। श्री रहतुलाल का परिवार गंगोह का सबसे बड़ा वैश्यकुल माना जाता था। रहतुलालजी के पिता भी बिरादरी के साथ थे। पंचायत के कहने पर पिता ने पुत्र को शुद्धि से दूर रखने का यत्न किया। पुत्र ने कहा चाहे कुछ भी हो जाए, मैं तो आर्यसमाज का साथ दूँगा। बड़े भाई भक्तजी ने रहतुलाल को कुछ कठोर शब्द कह दिये। रहतुलालजी ने पत्नी से कहा, यदि मेरा साथ देना हो तो भोजन पृथक् बनाओ अन्यथा मेरा-तेरा कोई सम्बन्ध नहीं। देवीजी ने पति का साथ दिया। आर्यों को बड़ी यातनाएँ दी गई। सगे-सम्बन्धियों को भी आर्यों के पास ठहरने नहीं दिया जाता था।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -

21. श्री तेजपाल सिंह आर्य	500	32. श्री गोपाल कृष्ण सेठी	2000
22. श्रीरंग विष्णु सुड्रिक	1000	33. श्री वेद प्रकाश हांडा	2000
23. आर्यसमाज यमुना विहार	550	34. श्री विजेन्द्र भाटी	200
24. श्री विनय चोपड़ा	500	35. श्रीमती पीताम्बरीदेवी डोंडियाल	100
25. आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी	7000	36. श्री जे. सी. खन्ना	500
26. श्रीमती पुष्पा नासा	3100	37. शेष कुमारी	200
27. श्रीमती उमा मोंगा	2000	38. श्री आई.डी. गुप्ता	2000
28. श्री अश्विनी कुमार आर्य	500	39. श्री गंगाशरण आदास आर्य	5000
29. श्री विद्या मित्र ठुकराल	2000	40. श्री ओम प्रकाश गोयल	500
30. आर्यसमाज सुन्दर विवहार	21000	41. आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर	1100
31. श्रीमती शकुन्तला कथूरिया	2000	42. श्री नरेश प्रताप सिंह आर्य	2000

- क्रमशः

आप भी पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें। 100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
5,10, 20 किलो की पैकिंग)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज नारायण विहार, नई दिल्ली

प्रधान	- श्री सतीश कामरा
मन्त्री	- श्री करण सिंह तंवर
कोषाध्यक्ष	- श्री राकेश मल्होत्रा

शोक समचार

आचार्य ओम वीर शास्त्री का निधन

आर्य समाज के वैदिक विद्वान आचार्य ओमवीर शास्त्री का फरीदाबाद में दिनांक 10 जनवरी 2018 रात्रि लगभग 9 बजे फरीदाबाद स्थित सर्वोदय अस्पताल में निधन हो गया है। शास्त्री जी अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

डॉ. राम भरोसे जी को पितृशोक

आर्य समाज जहांगीरपुरी दिल्ली के मन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा के अन्तरंग सदस्य डॉ. राम भरोसे जी के पूज्य पिता श्री रघुबीर साह जी का 10 जनवरी को रात्रि 11:55 बजे लोकनायक हस्पताल में देहावसान हो गया है।

वे लगभग 81 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार 11 जनवरी को आजादपुर दिल्ली स्थित शमशान भूमि में पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ 13 जनवरी को आर्यसमाज साधु बिशन हॉल जहांगीरपुरी में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवती अनेक आर्यसमाज के अधिकारियों एवं सदस्यों के साथ-साथ सभा अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री यशपाल आर्य जी दिवंगत

आर्य समाज पंचदीप पीतमपुरा, दिल्ली के प्रमुख अधिकारी एवं सभा सहयोगी श्री यशपाल आर्य जी का 2 जनवरी 2018 को निधन हो गया। वे लगभग 75 वर्ष के थे। उनकी स्मृति में रविवार 7/1/18 को अग्रसेन भवन पीतमपुरामें शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई जिसमें विभिन्न समाजों के पदाधिकारियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। वे आपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

श्री राजेश्वर कुमार गुप्ता को मातृ शोक

आर्य समाज भोगल दिल्ली के सक्रिय कार्यकर्ता श्री राजेश्वर कुमार गुप्ता की पूज्य माता श्रीमती सत्यवती जी का 5 जनवरी 2018 को निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। श्रद्धांजलि सभा 8 जनवरी सायं 4 बजे दुर्गा मन्दिर जंगपुरा में आयोजित की गई जिसमें विभिन्न समाजों के पदाधिकारियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं विचारकों से हार्दिक निवेदन

आर्यजगत के समस्त आर्य विद्वानों, लेखकों एवं विचारकों से निवेदन है कि निम्नलिखित विषयों पर अपने शोधपूर्ण व प्रमाणित लेख आर्य सन्देश में प्रकाशनार्थ प्रेषित करें। आपके लेखों को आपके नाम व पते सहित आर्य सन्देश में प्रकाशित किया जाएगा तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित भी किया जाएगा। आपसे विशेष निवेदन है कि यदि आप किसी बात की पुष्टि के लिए किसी पुस्तक से कोई उद्धरण लेते हैं तो उस पुस्तक का नाम, प्रकाशक एवं पृष्ठ सं. अवश्य लिखें। कृपया अपना लेख ए-4 साईज के प्लेन कागज पर 1000 से 1500 शब्दों में साफ-साफ लिखें/कम्प्यूटर से टाईप कराकर भेजें। कृपया एक बार में केवल एक विषय पर लिखें। विषय वस्तु को केन्द्र में रखते हुए सकारात्मक लिखें। भविष्य में आपके लेखों को प्रवचनों के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है, अतः मौलिकता और प्रमाणित बनाए रखें। विषय इस प्रकार हैं-

11. सत्यार्थ प्रकाश एक अमृत
12. मानव सभ्यता का मूल इतिहास,
13. वेद एवं अन्य मत मतान्तर
14. मानव के कर्तव्य पंचमहायज्ञ,
15. विशुद्ध आश्रम व्यवस्था
16. विशुद्ध वर्ण व्यवस्था,
17. रामायण एवं महाभारत एक ऐतिहासिक ग्रंथ मिलावट वास्तविकता एवं कारण
18. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम प्रेरक जीवन के धनी, 19. योगेश्वर श्रीकृष्ण प्रेरक जीवन एवं शंकाएं, 20. महाभारत के कृष्ण बनाम पुराणों के कृष्ण,

आप अपने लेख निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

सम्पादक, साप्ताहिक आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com

75 वर्ष से अधिक आयु वर्ष के कार्यकत्ताओं के लिए शुभ सूचना

दिल्ली के वे व्योवृद्ध आर्य महानुभाव जो अपने जीवन के आरम्भ से ही आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान दे रहे हैं और जिनकी आयु 75 वर्ष से अधिक हो चुकी है, से निवेदन है कि अपने अनुभव एवं जीवन परिचय प्लेन कागज पर साफ-साफ लिखकर अथवा टाइप कराकर फोटो सहित, 'सम्पादक, आर्य सन्देश' के नाम 'दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा-15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' पर भेजने की कृपा करें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भी किया जा सकता है। आपका अनुभव व जीवन परिचय नवयुवकों को प्रेरणा देने के उद्देश्य से आर्य सन्देश में प्रकाशित किया जाएगा।

- महामन्त्री, 9958174441

सेवक चाहिए

आर्य समाज वेद मन्दिर, सी.पी ब्लाक मौर्य एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली- 34 को एक योग्य सेवक की आवश्यकता है। आर्य सिद्धान्तों पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति अपना आवेदन, प्रकाशन के 15 दिनों के अन्दर, **प्रधान आर्य समाज** के नाम भेजें। योग्यतानुसार सहायता राशि तथा निःशुल्क आवास सुविधा उपलब्ध होगी।

- सोहनलाल आर्य, मंत्री, 9810716655

Arya Bride

Suitable match for Arya Punjabi Handsum , fair boy, never married 5'10", DOB 7-7-75, 23:45 hrs. Delhi. B.Com (D.U), Professional in BMS,Own settled Electronic business (a Pvt Ltd Comp.) Income 6 Lacs p.a. Own House. Seeks culture & respectable family. No dowry & Mail girls profile and photo at **deep5914@gmail.com**. Tel - 9810414037.

Advt.

प्रवेश प्रारम्भ

महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर लुधियाना में (सत्र 2018-2019) छठी कक्षा में (आयु +9 से -11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य मात्र 100/-) भरकर 31 मार्च 2018 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवएं (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं)

कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 1 अप्रैल 2018, रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

- मोहन लाल कालड़ा, मैनेजर
मो. 09814629410

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 जनवरी, 2018 से रविवार 21 जनवरी, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18/19 जनवरी, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 जनवरी, 2018

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन

यज्ञ - प्रात: 9:30 बजे **उद्घाटन** - प्रात: 11 बजे **ऋषि लंगर** - 1 बजे

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त आर्य जनों की सूचनार्थ है कि आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली के लिए क्रय किए गए भवन - के.- 1046 का उद्घाटन समारोह रविवार 4 फरवरी, 2018 को प्रात: 9:30 बजे यज्ञ के साथ आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर सामूहिक एकरूप यज्ञ, भजन एवं शोभा यात्रा का भी आयोजन किया जाएगा।

ज्ञातव्य है कि आर्य समाज जहांगीर पुरी लगभग 40 वर्षों से बिना भवन के ही क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार एवं आर्यसमाज की गतिविधियां संचालित रहा है। अत: आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं अपना सहयोग प्रदान करें। जल्दी ही सभा के निर्देशन में आर्यसमाज के इस नए भवन का निर्माण कार्य आरम्भ किया जाएगा। - *रामभरोसे आर्य, मन्त्री*

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

48 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

अपने विवाह योग्य बच्चों का आर्यसमाज मैट्रीमोनी पर पंजीकरण कराएं : आर्य परिवार का रिश्ता पाएं

उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल हेतु 19वां आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

पंजीकरण शुल्क : 800/- रु. दिनांक : 4 फरवरी, 2018

स्थान : आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

पंजीकरण फार्म सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर उपलब्ध है।

पृष्ठ 4 का शेष

तू जल्दी कर, तू जल्दी कर।
मुझको तू धर्म निभाने दे,
मेरे हृदय की पीड़ा हर।।

जल्लाद ने हकीकत राय की बात मानकर तलवार हाथ में ली और दिल मजबूत कर वीर हकीकत राय की गर्दन पर तलवार का भरपूर वार किया। हकीकत राय का सिर कटकर एक ओर धरती पर गिर गया। कहते हैं वह उस समय हंस रहा था। धन्य था बालक हकीकत राय। वह धर्मरक्षा में अपना सिर कटवाकर भारत माता का सिर संसार में ऊंचा कर गया। जब तक सूरज, चांद सितारे, पृथ्वी पर रहेंगे, वीर हकीकत राय का नाम भी अमर रहेगा और भारत वीरों को धर्म रक्षा में बलिदान होने की प्रेरणा देता रहेगा।

सज्जनों! कुछ व्यक्ति कहते हैं कि उस समय मुगल बादशाह शाहजहां का शासन था तथा उसने नवाब और काजियों को मृत्यु दंड दिया था किन्तु यह विचार निराधार है क्योंकि हकीकत राय का बलिदान सन् 1734 ईस्वी में बसन्त पंचमी के दिन हुआ था और उस समय मोहम्मद शाह रंगीला का शासन था। औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 ईस्वी में हो चुकी थी तथा शाहजहां की मौत तो औरंगजेब की जेल में ही हो गई थी। वास्तव में यह मुसलमानों की हिन्दुओं को मूर्ख बनाने की सोची समझी चाल है। हमें इससे सावधान रहना चाहिए। अन्त में प्रभु से प्रार्थना है -

हे जगत् पिता हे जगदीश्वर!
अब आर्यवर्त्त पर दया करो।
दो सुमति भारतीय वीरों को,
अज्ञान अविद्या नाथ हरो।।
जिससे यह देवों का भारत,
सिर मौर जगत का बन जाए।
भूखा-नंगा, अरु-दीन-दुखी,
भारत में नज़र नहीं आए।।

- पं. नन्दलाल 'निर्भय'
ग्राम बहीन, जिला-पलवल (हरि.)

94 साल की उम्र में भी जब मेरे दांत ठीक रह सकते हैं तो आपके क्यों नहीं ?

एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
(बिना तम्बाकू के)

23 जड़ी बूटियों एवं अन्य पदार्थों से निर्मित आयुर्वेदिक दंत मंजन

यह दंत मंजन ही नहीं दांतों का डाक्टर है।

महाशय धर्मपाल, चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा0) लि0

इसके सुबह - शाम नियमित प्रयोग से दांतों का दर्द, पायेरिया, मुंह की दुर्गन्ध, मसूड़ों की सूजन, रक्त बहना, ठण्डा गरम पानी लगना, दांतों में जमी मैल छुड़ाने के लाभ के साथ-साथ दांत सारी उम्र चलें, पूरी तरह सुरक्षित व मजबूत रहें।

इसे नीचे बताई गई प्रयोग विधि अनुसार एक सप्ताह नियमित रूप से इस्तेमाल करें और फर्क महसूस करें। फायदा न होने पर पैसे वापस पायें।

प्रयोग-विधि सबसे पहले मुलायम टूथ ब्रश से दांतों में मंजन करें। उसके बाद थोड़ा मंजन बायें हाथ की हथेली पर डालकर अपने दायें हाथ की उंगली से दांतों और मसूड़ों पर आहिस्ता-आहिस्ता मलें। दांतों के अंदर के हिस्से को भी अपने अंगूठे से मलें। रात को सोने से पहले, सुबह उठने के बाद। अगर दांतों में दर्द होता हो तो दांतों में मंजन करके 10 मिनट के बाद थूक दें, कुल्ला न करें।

ESTD. 1919

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015
फोन नं० 011-41425106 - 07 - 08
Website : www.mdhspices.com

शाह जी दी हट्टी
दुकान नं० 6679, खारी बावली,
दिल्ली - 110006 फोन नं० 011 - 23991082

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह